International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 61-63

बिहारी की अभिव्यन्जना पद्धति-रीति-श्रृंगार के संदर्भ में

लक्ष्मी सुजाता

असिस्टेंट प्रोफेसर, न्यू होराइजन कालेज

प्रस्तावना

तुलसी के मानस के बाद यदि किसी ग्रंथ की साहित्यक लोकप्रियता प्राप्त हुई तो वह बिहारी कृत सतसई है ।

ब्रज भाषा बरनी कविन बहु विधि बुद्धि विकास ।
सब की भूषण सतसई करो बिहारीदस ॥
जो कोऊ रस-रीति को समुज्गौ चाहै सार ।
पढ़ै बिहारी-सतसई कविता को सिंगार ॥

मानस के बाद सतसई पर भी अनेक टीकाएँ निर्मित हुई ।

बिहारी की जीवनी :- बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविंदपुर में १६०३ के लगभग हुआ । वे मथुरा के चौबे थे । वे मिर्ज़ा राजा जयसिंह के आश्रय में रहते थे । जब महराज छोटी रानी के प्रेम में इतने मग्न हो गए कि राजकार्य भूल गए । तो बिहारी ने यह सुप्रसिद्ध दोहा लिख कर भेजा था -

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यह काल ।
अली कली ही सौं बँध्यो आगे कौन हवाल ॥

कहा जाता है कि तभी से महराज् ने उन्हें ऐसे ही सरल दोहे बनाने की आज्ञा दी और हर एक दोहे पर एक अश्रफी इनाम में मिलने लगी । इस प्रकार सात सौ दोहों की रचना हुई जो सतसई नाम से प्रसिद्ध हैं । बिहारी की सतसई एक मुक्तक रचना है ।

तसैया को दोहरो ज्यों नावक को तीर ।
देखन को छोटो लगे घाव करे गंभीर ॥

बिहारी की भाषा :- मूलत: बिहारी की भाषा ठेठ ब्रज भाषा है परन्तु बिहारी बोधिनी के टीकाकार लाला भगवानदीन "दीन" का यह अनुमान है कि बिहारी अपने लड़्कपन में बुन्देल्खण्ड में रहे हैं । कारण यह है कि उनकी कविता में ठेठ बुन्देल्खण्डी शब्दों का ऐसा ठीक प्रयोग पाया जाता है जैसा अन्य प्रान्त का निवासी कर नहीं सकता ।

उदाहरण के लिए :-

१. लाखिबी - बिहारी बोधिनी का दोहा नंबर-२०
२. खए - दोहा नं ३५
३. रहँटघरी - दोहा नं १४२
४. सदी-(सिब्बी) - दोहा नं १६५ आदि ।

अभिव्यन्जना :- क्रोंचे के अनुसार जब द्रष्टा किसी कविता को पढ़्ता है तो उसके चित्त पर कुछ संस्कार पड़्ते हैं, इन संस्कारों के जागृत होने पर मन-ही-मन इनकी आन्तरिक अभिव्यक्ति होने लगती है,जो अभिव्यन्जना कहलाती है । द्रष्टा के मन में सौन्दर्य-बोध से एक प्रकार के आनन्द की उत्पत्ती होती है । तब अभिव्यन्जना आन्तरिक न होकर श्ब्दों के माध्यम से स्थूल रूप में अभिव्यक्त होती है । डा. सावित्री सिन्हा का मत है कि आ्चार्य रामचन्द्र शुक्ल के विचार में काव्य-रचना अथवा काव्यास्वाद्न के समय व्यक्ति इतना भाव-विभोर हो जाता है कि वह अपने शीश तथा शरीर के सापेक्ष सम्बन्धों की चिन्ता को कुछ समय के लिए स्वत: बिसार देता है । व्यक्ति सहजावस्था की स्थिति में अपनी सीमाओं को भूल जाता है और उसकी अनुभूति इतनी प्रखर हो उठ्ती है कि वह एकाग्र होने के कारण आनन्द की उपलब्धि करता है।

बिहारी की अभिव्यन्जना पद्धति :- चूँकि बिहारी एक श्रृंगारी कवि हैं, उनके काव्य की आत्मा भी श्रृंगार ही है । श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग व वोयोग की अभिव्यक्ति बिहारी सतसई में हुई है । संयोग पक्ष के चित्रण में बिहारी के निम्न भाव की अभिव्यंजना की है जिसका सौंदर्य सीधे ह्रदय को स्पर्श करता है ।

उदाहरणार्थ :-

कहत, नटत, रीझत, खीजत, हँसत ।
मिलत, लजियात, भरै भौन में करत है नैननु ही सो बात ॥
(बिहारी रत्नाकर)

इस दोहे में प्रेम का एक पूरा व्यापार सामने आता है । अपने दोहों में बिहारी ने भावों का अगार भर दिया है । बिहारी श्रृंगार रस के विलक्षण परतिनिधि थे , क्योंकि आप प्रत्येक प्रकार की घटना को लेकर श्रृंगार मे घटित करते हैं ।

प्रमाण के लिए :- बिहारी बोधिनी का

दोहा नं ५ - सघन कुंज छाया सुखद,सीतल मंद समीर ।
मन हवै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर ॥

दोहा नं ६१ - सबु ही तन समुहाति छिन,चलति सबनि दै पीठ ।
वाही तन ठहराति यह, किबलनुमा लौं दीठ ॥
दोहा नं १०४- चलन न पावत निगम मग, जग उपजी अति त्रास।
कुच उतंग गिरिध हह्यौ, मीना मैन मवास ॥
दोहा नं १२४ - मंगल बिंदु सुरंग, मुख ससि केसर आड़ गुरु ।
इक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन जगत ॥

ऐसे अनेक प्रमाण बिहारी बोधिनी में मिलते हैं । कवि ने विरह व्यंजना के दोहों की भी रचना की है । परन्तु अधिक चमत्कार प्रदर्शन के कारण ऊहात्मक बन गया है । बिहारि की जो नायिका है वह अपने स्वरूप में शास्त्रीय प्रतिमानों से निर्मित नहीं है बल्कि उसका स्वरूप ठेठ ब्रज युवती है ।
विरह व्यंजना का उदाहर्ण देखिए : -

नैंकु न जानी पति यौं,पर्यौ बिरह तनु छामु ।
उठति दियैं लौं नांदि हरि, ल्यैं तिहारो नामु ॥

यहाँ विरहिणी नायिका की सखी नायक कृष्ण से उसकी विरह-दशा का वर्णन कर रही है-हे कृष्ण ! विरह के कारण उसका शरीर इतना जीर्ण हो गया है कि वह बिल्कुल भी दिखाई नहीं देती है, किन्तु तुम्हारा नाम लेने पर वह दीपक की भाँति नाँद उठ्ती है । यहाँ विरह का ऊहात्मक वर्णन है ।

करी बिरह ऐसी तऊ, हैल न छाड़्तु नीचु ।
दीनै हूँ चसमा चखनु,चहै लहै न मीचु ॥

बिहारी काव्य रीति के पक्के ज्ञाता थे । काव्य-साहित्य के जनने के लिए जितनी सामग्री दरकार है वह सब सतसई में जरूरत से ज्यादा भरी पड़ी है । उनोंने अपने दोहों में अलंकारों का भी विशेश ध्यान रखा है ।
उदाह्रण के लिए बिहारी बोधिनी का दोहा नं ५६५ देखिए : -

कह लाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ ।
जगर तपोवन सो कियो, दीरघ दाघ निदाघ ॥

संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत नायिका के शरीर का वर्णन कुछ इस प्रकार है : -

मुख वर्णन : - सूर उदित हू मूदित मन, मुख-सुखमा की ओर ।
चितै रहत चहुँ ओर तें, निश्चल चखनि चकोर ॥
कटि वर्णन : - ज्यौं ज्यौं कुच मिति अति अधिकात ।
त्यौं त्यौं छिन छिन कटि छपा, छीन परति सी जाति ॥
जंघा वर्णन : - जंघ जुगल लोयन निरे, करे मनो बिधि मैन ।
केलितरुन दुखदैन ए, केलि तरुन सुखदैन ॥

बिहारी के दोहों में दूती और अभिसारिका का वर्णन भी अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है ।

उदाहरण के लिए दूती का वर्णन : -

काल बूत दूती बिना, जुरै न आन उपाय ।
फिरि ताक्व टारे बनै, पाके प्रेम लदाय ॥

अभिसारिका वर्णन : -

गोप अथाइन ते उठे, गोरज छाई गैल ।
चलि बलि अलि अभिसारिके, भली सँझौखी सैल ॥
अरी खरी सट्पट परी, विधु आधे मग होरि ।
संग लगे मधुपन लई, भगन गली अँधेरि ॥

बिहारी के दोहों में षटऋतु वर्णन अत्यन्त रमणीय है । जैसे फागुन,बसन्त,ग्रीष्म, पावस आदि ऋतुओं का अस्त्यन्त सुन्दर वर्णन प्रस्तुर किया है ।

फागुन का एक उदाहरण: -
छुटत मुठी सगही छुटी, लोकलाज्कुल्चाल।
लगे दुहुने इक बेर ही चलि चित्त, नैन, गुलाल ॥

सुदीर्घ काल से चली आती हुई मुक्तक काव्य-परम्परा की समस्त विशेषताओं को बिहारी ने स्पर्श किया है । यद्यपि रसराज श्रृंगार का इसमें महत्व है और उसके सभी अंग-प्रत्यंग फैल-पुटक उन्की सतसई में विश्राम कर रहे हैं। राध-कृष्ण का सामान्य नयक-नायिका के रूप मेंउपादान तो हुआ ही है और दर्शन-आकर्षण, संकेत-अभिसार, दूती-सम्प्रयोग, खंड़िता आदि सामान्य रस तत्वों के साथ साथ कृष्ण की बाल लीला, गोवर्धन-धारण, रास लीला, भमर-गीत इय्यादि भी छूटने न पाये हैं ।इसके अलावा सूक्तियों में भी सामान्य-जीवन-विषयक बिहारी के दष्टिकोण को भी हम भली भाँति समझ सक्ते हैं।

निष्कर्ष : - आत्मा की सहजानुभूति ही अभिव्यन्जना है । किसी काव्य का महत्व जितना उसकी अभि्वव्यन्जना-पद्धति से होता है, वस्तु तत्व से नहीं । अभिव्यन्जना-पद्धति की दृष्टि से भरतीय साहिय शास्त्र-जगत में अनेक सम्प्रदायों का प्रवर्तन हुआ है और इस दिशा में सौन्दर्य के आधारभूत अनेक मानदण्ड स्थापित किये गये हैं, जिनके द्वारा कलात्मकता की परीक्षा होती है । कहना न होगा कि बिहारी इस दृष्टि से अत्यन्त सफल कवि हैं ।

संदर्भ: -

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास-लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय नवीन संस्करण-पृष्ठ २०६,२०७
2. बिहारी सासई भाष्य - डा. देशराज सिंह भाटी - पृष्ठ ५,६
3. बिहारी सत्सई भाष्य - डा. देशराज सिंह भाटी - पृष्ठ ५७
4. बिहारी सतसई भष्य - डा. देशराज सिंह भाटी - पृष्ठ ८९
5. बिहारी सतसई भाष्य - डा. देशराज सइंह भाटी - पृष्ठ १५४
6. बिहारी सतसई भाष्य - डा. देशराज सिंह भाटी - पृष्ठ १०५

7. बिहारी-बोधिनी - बिहारी सतसई की टीका - लाला भगवानदीन "दीन" - पृष्ठ २
8. बिहारी-बोद्धिनी - बिहारी सतसई की टीका - लाला भगवनदीन "दीन" पृष्ठ २१
9. बिहारी-बोधिनी - बिहारी सतसई की टीका - लाला भगवानदीन "दीन" पृष्ठ ३५
10. बिहारी-बोधिनी - बिहारी सतसई की टीका - लाला भगवानदीन "दीन" द्वितीय शतक पृष्ठ ३४,३५,३६
11. बिहारी-बोधिनी - बिहारी सतसई की टीका - लाला भगवानदीन "दीन" चतुर्थ शतक पृष्ठ १००,१०१,१०५
12. बिहारी-बोधिनी - बिहारी सतसई की टीका - लाला भगवानदीन "दीन: षष्ठम शतक पृष्ठ १७३
13. रीतिसिद्ध-कवि - विकीपीडिया - अन्तर्जाल (इन्टेर्नेट)